॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

फरवरी 2021 वर्ष 25, अंक 02 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2077 ❑ कुल पृष्ठ 10
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

बालशिक्षा और महर्षि दयानन्द

❑ डॉ. शशिप्रभा कुमार, नोएडा

शिक्षा शब्द शिक्ष् विद्योपादाने धातु से टाप् प्रत्यय लगाकर बनता है। तदनुसार '**शिक्ष्यते उपादीयते विद्यया सा शिक्षा**' अर्थात् जिसके द्वारा विद्या का उपादान या ग्रहण किया जाए, वही शिक्षा है। इस दृष्टि से शिक्षा विद्या-प्राप्ति का साधन है और विद्या वही होती है जो मुक्ति की तरफ ले जाने वाली हो-'**सा विद्या या विमुक्तये।**' किन्तु खेद का विषय है कि आधुनिक युग में शिक्षा के इस मूल अर्थ को भुलाकर उसे केवल साक्षरता का पर्याय समझा जाने लगा है। इसलिए आज महती आवश्यकता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली के प्रेरक, शाश्वत् तत्त्वों का समुचित प्रचार-प्रसार हो। महान् मनोवैज्ञानिक, क्रान्तद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में बालशिक्षा के विषय में ऐसे ही अमूल्य संकेत दिए हैं जो आज के शिक्षित किन्तु मूल्यहीन मानव-जीवन को सही दिशा देने में सक्षम हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली के उक्त आदर्शों के आधार पर महर्षि ने संस्कार-पद्धति का प्रतिपादन किया है। इसके अनुसार बालक की उत्पत्ति से पूर्व, गर्भावस्था में आने पर या उससे भी पूर्व बीजरूप में शिक्षण हो सकता है और बालक को जैसा बनाना हो, उसे वैसा बनाने के लिए माता-पिता को अपने संस्कार एवं प्रयास को वैसी दिशा देनी होगी। इस भांति माता-पिता के संस्कारों से बालक के आरम्भिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है और फिर बाद में उसका परिवेश या वातावरण इन संस्कारों को विकसित करने में सहायक होता है। इसी पद्धति को संस्कार-पद्धति कहते हैं। संस्कारों की इस शिक्षण पद्धति से बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक-सर्वाङ्गीण विकास होता है और समग्र व्यक्तित्व को सुसंस्कृत करना ही शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है।

अत: ज्ञान के उपार्जन और बुद्धि के परिमार्जन में ही नहीं, बालकों के नैतिक चरित्र और संस्कृत व्यक्तित्व के निर्माण में भी संस्कारों का बड़ा महत्व है। इसलिए वैदिक परम्परा में सोलह संस्कारों की प्रक्रिया मानव के सांस्कृतिक उन्नयन हेतु निर्धारित की गई और इसका प्रारम्भ व्यक्ति के जन्म से भी पूर्व माना गया। जैसे मिट्टी के नए कच्चे बर्तन पर खींची गई लकीर हमेशा के लिए अंकित हो जाती है, वैसे ही कोमल मति शिशुओं के अबोध अन्त:करण पर पड़े हुए संस्कार अमिट होते हैं-

यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्।

इसमें सन्देह नहीं कि बालकों के सुकुमार हृदय में संस्कारों का आधान सर्वप्रथम माता-पिता ही करते हैं। इसलिए शतपथ ब्राहमण के वचन 'मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषों वेद' की व्याख्या करते हुए महर्षि सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि 'वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। इसलिए 'मातृमान्, पितृमान्' शब्द का ग्रहण उक्त वचन में किया गया है अर्थात् जन्म से 5वें तक बालकों को माता तथा 6 से 8वें वर्ष तक पिता शिक्षा करें।

कहने की आवश्यकता नहीं कि आज माता-पिता अपने इस दायित्व का यथोचित पालन नहीं कर रहे, इसलिए केवल विद्यालय के शिक्षकों से संस्कारधारन की अपेक्षा नहीं की जा सकती। नन्हें-मुन्ने शिशुओं के सरल, निर्मल हृदय पर जितना माता के उपदेश का प्रभाव पड़ता है उतना किसी का नहीं। अत: यह कहना सर्वथा समीचीन है कि बालक की आद्य गुरु, आरम्भिक शिक्षिका उसकी माता ही होती है। '**माता निर्माता भवति**' कथन का वास्तविक आशय यही है कि माता ही सबसे महत्त्वपूर्ण गुरु है-

नास्ति मातृसमो गुरुः

शैशव से ही माता अपनी सन्तान में जो संस्कार आरोपित कर देती है वे आजीवन उस बालक के व्यक्तित्व में समाये रहते हैं। इसलिए महर्षि लिखते हैं कि-

(शेष पृष्ठ 8 पर)

तुम उड़कर टंकारा जाना

मेलों में मेला अलबेला, यह सुरभित कर मेला आना।
हे वासन्ती पवन हवन की, तुम उड़कर टंकारा जाना।।
जहाँ यशोदा अमृतावेन, माँ की कातर वाणी होगी।
जन्में थे जहाँ मूलशंकर, उस घर की ओर चले जाना।
वे जहाँ खेल कर बड़े हुए, उन गलियों में भी हो आना।
उनके जन्मोत्सव नामकरण, वर्षगाँठ के गीत तराना।
पर्व और संस्कारों के सुन, गाना और बजाना आना।
खलियाना खेत उद्यान कूप, रूक कर पाठ ठिकाना आना।
हे वासन्ती पवन हवन की, तुम उड़कर टंकारा जाना।।

- श्री देवातिथि

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पदम् श्री डॉ. पूनम सूरी

डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान निर्विरोध निर्वाचित

दिनांक 07 दिसम्बर 2020 को डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति की वार्षिक बैठक में **पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी** को निर्विरोध प्रधान निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रतिनिधियों ने करतल ध्वनि कर अपनी पूर्ण सहमति दिखाते हुए उन्हें निर्वाचित घोषित किया गया। इसी अवसर पर **श्री अजय सूरी जी** को महामन्त्री के रूप, **श्री एन.के. ओबराय जी** को उपप्रधान के रूप में, **श्री महेश चोपड़ा जी** को सचिव के रूप में तथा **श्री आर.के. सेठी जी** को कोषाध्यक्ष के रूप में निर्विरोध निर्वाचित किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी ने सभी का धन्यवाद किया एवम् **"विचार"** पर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि विचार ही ऐसा शक्तिशाली शब्द है जो बड़ी से बड़ी सफलता को प्राप्त कर सकता है। इसलिए डी.ए.वी. अपने छात्रों के विचारों में आर्य मान्यताओं को उनके प्रारंभिक काल से ही मन-मस्तिष्क में स्थापित कर एक अच्छा नागरिक एवम् विचारशील व्यक्तित्व के युवाओं का निर्माण करता है।

**"खुशहाल चन्द्र श्री ओम् प्रकाश की, बगिया को है महकाया।
हर हाल में खुश रहो सदा, सन्देश यह तुमने फैलाया॥
पूनम के चांद सा चमको, और शिक्षा क्षेत्र को चमकाओ।
नेतृत्व करो डी ए वी का तुम, खुर्सन्द की पीढ़ी महकाओ॥"**

-हरि ओइम् शास्त्री फरीदाबाद

श्री एन.के. ओबरॉय
उपप्रधान

श्री अजय सूरी
महासचिव

श्री महेश चोपड़ा
सचिव

श्री आर.के. सेठी
कोषाध्यक्ष

श्री अजय सहगल (टंकारा वाले)

डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव मनोनीत

इसके अतिरिक्त निम्न संस्थाओं को भी सेवाएं दे रहे हैं

सचिव, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
सचिव, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी
सचिव, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया
प्रधान, आर्य समाज कस्तुरबा नगर, नई दिल्ली
मन्त्री, आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली
सम्पादक, टंकारा समाचार

जीवन में करने योग्य कार्य

प्रार्थना:- 1. प्रार्थना करने से हमारा सम्बन्ध भगवान के साथ जुड़ जाता है। 2. हमारे शब्द हमारे कानों तक पहुँचने से पहले उनके भाव भगवान तक पहुँच जाते हैं। 3. प्रार्थना एक सशक्त दवा के समान है जो दुखी मन को पुन: स्वस्थ कर देती है।

प्रणाम:- 1. बड़ों को प्रणाम करने से हमें उनकी शुभकामनाएँ प्राप्त होती हैं। वे शुभकामनाएं हमारे भविष्य का निर्माण करती हैं। प्रणाम करना एक विनय पद्धति है जो विनय गुण को पुष्ट करती हैं। 2. जब बड़ों को प्रणाम किया जाता है तो हमें हमारी एवं उनकी स्थिति ध्यान में आती है, जिससे उनके प्रति अविनय के भाव नहीं आते और हमें अहंकार भी नहीं आता।

सामायिक:- 1. सामायिक करना समता का पूर्वाभ्यास है। 48 मिनट समता का अभ्यास करके धीरे-धीरे सम्पूर्ण दिवस समता में जीना आ जाता है। 2. जीवन भर पाप का त्याग किया जाए, यह ही उत्तम है। इतना सामर्थ्य नहीं है तो कम से कम प्रत्येक घण्टे के 2-2 मिनट बचाकर 48 मिनट के लिए तो पाप का त्याग करना ही चाहिए। 3. सामायिक करना संसार से सम्बन्ध रहित होना हैं। स्वयं को स्वयं में स्थिर करना है। वह स्थिरता बचे हुए 23 घण्टे में सही गति देती है। अर्थात् शुभ में ही प्रवृत्त कराती है। समता अनुपम सुख को प्राप्त करवाती है।

प्रवचन-श्रवण:- 1. प्रवचन-श्रवण करने से दुष्वर तथा उनकी वाणी की भक्ति होती है। वह भक्ति उस वाणी को जीने की क्षमता भी देती है। 2. प्रवचन-श्रवण से महत्त्वपूर्ण वस्तुओं की महत्ता पता चलती है एवं अपनी गलती का अहसास होता है। उन गलतियों को सुधारने की राह प्रशस्त होती है। 3. प्रवचन-श्रवण से हमारी अनादिकालीन गलत मानसिकता पर करारा प्रहार होता है। हमारी मान्यताएँ सही बनने लगती हैं जो जीवन-परिवर्तन के लिए बहुत उपयोगी हैं।

क्षमा:- 1. क्षमा माँगने और देने वाले दोनों का मन हल्का हो जाता है। भारी मन से कर्मबन्ध ज्यादा होते हैं। 2. क्षमा न देने तथा न माँगने से वैरानुबन्ध होता है। अगर कषाय-भाव मन में रह जाता है तो कालान्तर में वह वैरानुबन्ध में बदल जाता है। क्षमा उस वैरानुबन्ध से बचाती है। ऋषियों में प्रथम है-क्षमा। क्षमा से धर्म का प्रारम्भ होता है। उसका अभ्यास करता हुआ जीव आगे के धर्मों में भी विकास करता है।

ज्ञानदान:- 1. ज्ञान होने पर और पात्र मिलने पर भी यदि ईर्ष्यावश अथवा गलत अभिप्राय से ज्ञान नहीं दिया जाता, तो ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है। 2. विद्या बाँटने से बढ़ती है। अच्छा जिज्ञासु मिलने पर हमारे भीतर के ज्ञानद्वार खुलने लगते हैं। श्रुत् से ही शासन जयवन्त रहता है। भगवान की वाणी को सभी में बाँटने से हम शासन की जयवन्तता में निमित्त बनते हैं।

सादा जीवन:- 1. सादा जीवन जीने वाले व्यक्ति प्रतिस्पर्धा एवं तुलनात्मकता से बाहर निकल जाते हैं, जिससे उनकी मानसिक शान्ति बढ़ती है। 2. अच्छा जीने, पहनने एवं भोगने वाले सभी की आँखों में बसते हैं, जबकि सादा जीवन जीने वाले सभी के दिलों में बसते हैं। 3. सादा जीवन में विश्वास रखने वाले संसार के किसी भी संसाधन को बर्बाद नहीं करते, जिससे विश्वमैत्री को जी पाते हैं।

बुजुर्ग सेवा:- 1. जिन बुजुर्गो की सेवा होती हैं, उनकी जीने की आस बनी रहती है, अन्यथा वृद्धावस्था उनके लिए बोझ बन जाती है, जो पल-पल मृत्यु की इच्छा में ही पूर्ण हो जाती है। 2. जिन वृद्ध लोगों की सेवा नहीं होती, वे तनावग्रस्त हो जाते हैं, जिससे उन्हें कई बीमारियाँ घेर लेती हैं। 3. घर के बुजुर्गो की सेवा उनके प्रति कृतज्ञता भी है। उन्होंने घर की इज्जत, धन-दौलत, अनुभव, प्यार, परिवार आदि बहुत कुछ हमें बिना माँगे उपहारस्वरूप दिया है। उनकी सेवा करना उनके द्वारा किए गए उपकारों के प्रति हमारी कृतज्ञता को दर्शाता है।

संस्कारदान:- 1. जिसमें संस्कार नहीं होते, उसका पूरा जीवन दु:ख से भर जाता है। 2. जिसे संस्कार दिए जाते हैं, वे गलत रास्ते पर नहीं जाते। इससे परम्परा, नीति, व्यवहार, रीति-रिवाज सभी सुरक्षित रहते हैं। कारण कि हर क्षेत्र के संस्कार उनके पूर्वजों में बहुत अनुभव के आधार पर आते हैं, जो जीवन को सुरक्षित और आनन्दित करते हैं। 3. संस्कार-दान एक जिम्मेदारी है, इसे पूरा नहीं करने वाला अपराधी है। उसे यदि सजा भी प्राप्त हो तो वह गलती से मुक्त तो हो जाएगा, पर उसने जो गलती की है, उसका परिशोधन नहीं हो सकता।

धर्मप्रचार:- धर्म के प्रचार से संसार में शान्ति, प्रेम, सत्य, ईमानदारी, उदारता, सेवा आदि गुणों का विकास होगा, जिससे सांर सुन्दर बनेगा। 2. अधर्म का प्रचार एवं प्रोत्साहन करना नहीं पड़ता, वह स्वत: होता है, परन्तु अच्छी चीजों का यदि प्रचार एवं प्रोत्साहन न किया जाए तो वे शीघ्र ही लुप्त हो सकती है।

साधर्मी-सेवा:- 1. साधर्मी की सेवा व्यवहार सम्यक्त्व का लक्षण है तथा इससे सम्यक्त्व दृढ़ भी होता है। 2. धर्म करने से मात्र धर्म के प्रति समर्पण होता है तथा धर्मी की सेवा करने में धर्म एवं धर्मी दोनों के प्रति समर्पण होता है। 3. साधर्मी की सेवा से धर्म का विकास होता है। इससे अनेक जीवों का हित होता है। इससे हर धर्मी का कर्त्तव्य भी पूर्ण होता है।

अहिंसा:- अर्थात् जीवों की रक्षा। इससे मैत्री भाव का विकास होता है। विश्व में हर जीव की अपनी महत्ता होती है। हम उन सभी जीवों को सम्मान एवं महत्व देते हैं। हिंसा से बचाती है। अत: अहिंसापूर्वक हर कार्य करने से पाप कर्म का डर नहीं होता है।

अजय टंकारावाला

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आर्य समाज मन्दिर (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001

विनम्र निवेदन

मान्यवर,

सादर नमस्ते ।

निवेदन है कि आपकी संस्था "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (ऋषि जन्म स्थान) जिसके आप सहयोगी एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं, में इस समय लगभग 125 ब्रह्मचारियों को आवास, भोजन व शिक्षा आदि की व्यवस्था निःशुल्क प्रदान की जा रही है। इस भीषण महामारी कोविड–19 के कारण दिनांक 24–03–2020 से हुए सम्पूर्ण भारत बन्द व तदुपरान्त संस्था पिछले 8 माह से लॉकडाउन में है। इसी तरह गौशाला में लगभग 110 गाय हैं जिनके पालन पोषण पर भी काफी व्यय हो रहा है।

इस भीषण महामारी के कारण ब्रह्मचारियों के पालन पोषण एवं गौशाला के लिए दान में भारी कमी आई है ऋषि जन्म स्थान टंकारा ट्रस्ट को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष भर ऋषि भक्त जन्म स्थान पर आते रहते थे और दान भी देकर जाते थे। परन्तु इन परिस्थितयों के कारण कोई भी ऋषि भक्त इस वर्ष टंकारा नहीं आया।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप ऋषि भक्त कभी भी नहीं चाहेंगे कि ऋषि जन्म भूमि में दान कम आने के कारण हमारे ब्रह्मचारी एवं गौशाला की गाय किसी कष्ट में रहें।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस विपत्ति की घड़ी में संस्था के ब्रह्मचारियों एवं गौशाला की गायों के पालन पोषण में हो रहे व्यय को देखते हुए आप अपनी सामर्थ्यानुसार अधिक से अधिक सहयोग करने की कृपा करें और अपने सहयोगियों एवं परिचित बन्धुओं को भी टंकारा ट्रस्ट को सहयोग देने हेतु प्रेरित करें। इसके लिए हम टंकारा ट्रस्ट की ओर से आपके आभारी रहेंगे।

आप सहयोग राशि "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम केवल खाते में चैक द्वारा आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 के पते पर अथवा RTGS, NEFT खात नम्बर 4665000100001067 पंजाब नेशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, **IFSC Code:PUNB0015300** में जमा कर सकते है। जमा की गई सहयोगी राशि, तिथि एवम् पते की सूचना फोन नं0 / व्हाटसअप नं0 9560688950 पर देने की कृपा करें ताकि आपको रसीद भिजवाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि आपको व आपके परिवार को सुख, समृद्धि तथा स्वस्थ स्वास्थ्य प्रदान करे।

योगेश मुंजाल	शिवराजवती मानकटला	अजय सहगल
कार्यकारी प्रधान	उपप्रधाना	मन्त्री

॥ ओ३म् ॥

Aum

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

"Krinvanto Vishwamarayam"

(Make the whole world Noble)

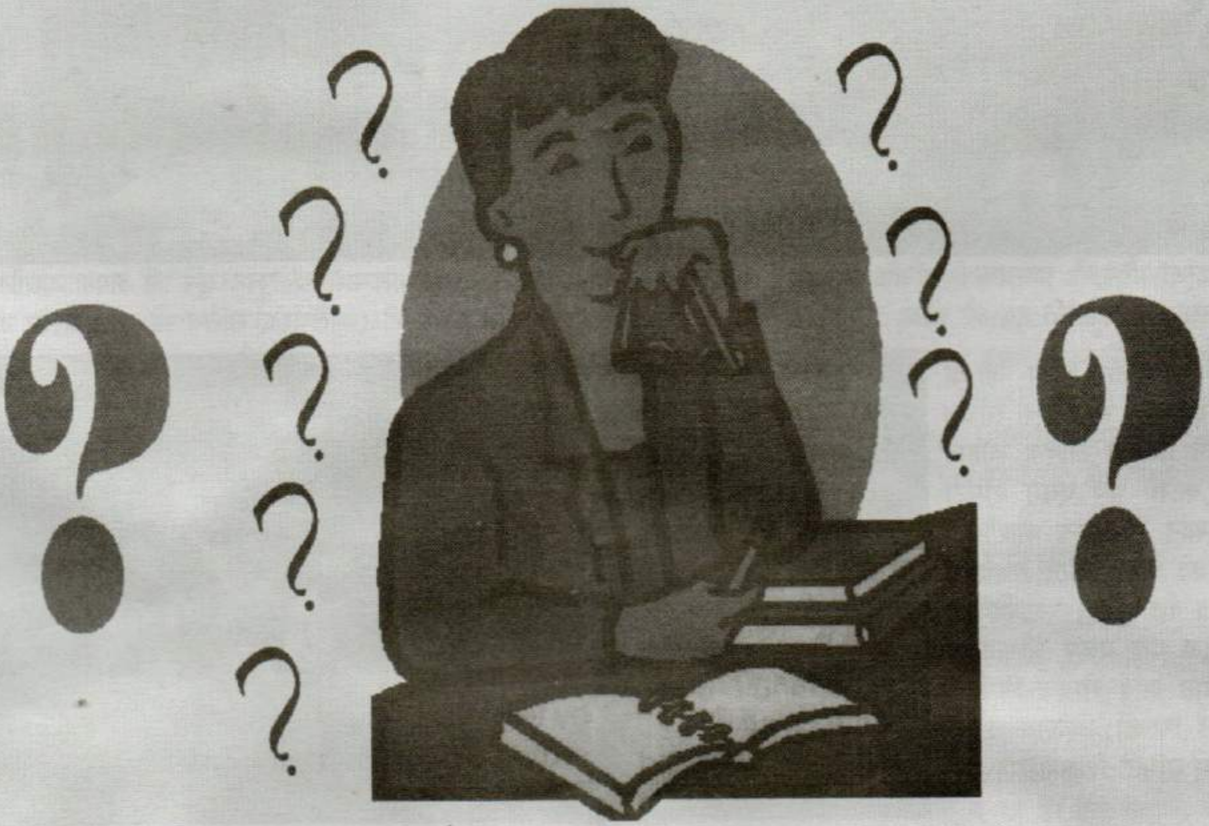

- Do you want to preserve your civilisation and culture?
- Do you want to know the real meaning of Dharma?
- Do you possess an inclination to know the Vedas and understand the Vedic principles?
- Do you want your children to have good character and habits?
- Do you want to grow spiritually and to have peace of mind?
- Do you want to learn Meditation, Yogasan, and the Sanskrit language?

Enroll today as member of an Arya Samaj.

You are Welcome

समाचार दर्पण

सम्पादक जी डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव मनोनीत

अजय सहगल डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव मनोनीत होने पर डी.ए.वी. के प्रधान पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी अपना आशीर्वाद देते हुए, साथ में उपप्रधान मनोनीति हुए श्री बी.के. मित्तल जी (जालंधर), सचिव श्री अरविन्द घई जी (जालंधर), सचिव श्री रमेश लिखा जी (हिसार)

सम्पादक अजय टंकारा वाला जी के डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव मनोनीत होने पर श्री आनन्द चौहान निदेशक ए.के.सी ग्रुप एवम् एमिटी शिक्षण संस्थान ने अपना आशीर्वाद अजय जी को प्रेषित करते, साथ में श्रीमती मृदुला चौहान, प्रधाना सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल एवम् श्री अजय चौहान, प्रधान आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली, निदेशक ए.के. सी ग्रुप एवम् एमिटी शिक्षण संस्थान।

आर्य समाज का आकर्षक तथा प्रभावशाली सत्पुरुषः श्री अजय सहगल
भारत विभाजन के बाद कुछ ही वर्षों में एक युवक का पदार्पण

आर्य समाज के कार्यक्रमों में यत्किंचित् सुयोग्य सत्पुरुषों की गणना होने पर भी एक नवयुवक ने सबको प्रभावित कर आर्यसमाज की साप्ताहिक गणना श्री अजय सहगल के बिना निर्मूल थी। कभी कहीं कविवर कालिदास की कृति "कुमार सम्भव" में एक पंक्ति है। सज्जनों के साथ चलो, उनका स्वाभाविक स्नेह आपको मित्रता की परिद्धि में ले जाता है।

"संगतं मनीषिभि सप्तपदेनमुच्यते" समान विचार वालों की पंक्ति आपको हर्ष प्रदान करती है। **"सदृशा सदृशे रज्यन्ते"** वेद साहित्य की अनुपम चिन्तन पद्धति ने भारतीय आर्य समाज को परिष्कृत रूप प्रदान किया है। देखा जाए तो आर्य धर्म मनुष्य जाति का पवित्रतम् एवं सहायक है क्योंकि अजय जी ने एक पंक्ति पढ़ी थी **"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षाम है"** हमारा व्यवहार तथा आचरण इतनी भव्यता से निरूपित हो कि लोग (साधारण पुरुष) सभी आपको अपना शुभ संकल्प वाला समझते हैं। मनुष्य की एक ऐसी पवित्रता है जो पुरुष आपकी मित्रता के लिए तड़पता है। आर्यत्त्व का ज्ञान होने से ऐसा प्रतीत हो कि आप आर्यसमाज के कर्णधार हैं।

"पुरुष त्रिवर्गो विहितः सुह्रदो हयनुसवितः" पुरुष जाति का त्रिवर्ग धर्म अर्थ और काम त्रिवर्ग मित्रों की भलाई के लिए ही है। जिनका स्वभाव मधुर होता है। उनसे मित्रता करना श्रेष्ठता का परिचायक है। तुम्हारे सुकृत कर्म तुम्हें ऐसे व्यक्तियों से परिचित कराते हैं। जो संस्था के लिए श्रेष्ठ है। रामायण में श्रीयुत् अजय जी ने एक पंक्ति पढ़ी थी। विपत्ति काल में जो प्रियता प्रदान करता है वही सच्चा मित्र है। वेदों की शिक्षा का प्रभाव ही था कि मित्र वही है जो सत्कार्यों से भलाई करना है और आपने अपने व्यवहार से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं जो विपत्ति काल में सदा सहायक होते है।

ऋग्वेद की एक पंक्ति है- **"न स सखा यो न ददाति सख्ये"**। वह पुरुष नाम मात्र के लिए मित्र है। जो समय पर मित्र की सहायता न करे।

ऋग्वेद की प्रतिभापूर्ण पंक्ति है-**"दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते"** दानी अमृत्त्व पाते हैं। **"अद्धा हि दानं बहुधा पसत्यं दाना च खो धम्मदद च सेय्यो।"** दान की महिमा अपार है, दान से धर्मा-चरण ही श्रेष्ठ है।

- टी.एस. के कण्णन, एल आई सी. कॉलोनी, डॉ. आर.के नगर, चेन्नई-41

प्रवेश सूचना
श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (गुरुकुल) में प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में अष्टाध्यायी, वेद, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है। सुविधा युक्त आवास, पौष्टिक भोजन, प्रातराश आदि के साथ गुरुकुलीय अनुशासन है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के आर्ष पाठ्यक्रम से मान्यता प्राप्त है। कक्षा सातवी और नौंवी उत्तीर्ण, स्वस्थ और चरित्रवान मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी समीप की आर्यसमाज के पदाधिकारी के पत्र तथा अपनी अंकशीट के साथ आवेदन करें। **आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय,** डाक टंकारा, जिला-मोरबी (सौराष्ट्र-गुजरात)-363650, मो. 09913251448

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम फोटो के साथ अपने गुरुकुल के प्राचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को क्रमशः पांच हजार, तीन हजार, दो हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा। ❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❑ भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी। ❑ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 15 फरवरी 2021 तक पहुंचा देवें। ❑ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 11.03.2021 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी। **अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें- आचार्य रामदेव** (प्राचार्य) मो. 9913251448

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती स्मृति सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्त्वावधान में स्व. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती जी की स्मृति ऐसे संन्यासीवृन्द जिनका अपना कोई मठ नहीं है और वें भारत भर में भ्रमण कर आर्य समाज और वेद का प्रचार करते हैं, को ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर 11 मार्च 2021 को रूपये 25000/- की राशि से सम्मानित किया जायेगा। आदरणीय संन्यासीवृन्दों से प्रार्थना है कि वे अपने द्वारा किए गए वेद प्रचार का विवरण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई के पते पर सूचित करने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वसान्य होगा। इसी अवसर पर इस वर्ष से किसी एक ऐसे विद्वान जो पूर्ण कालिक वेद एवम् वैदिक मान्याताओं के प्रचार प्रसार में संलग्न है और किसी भी प्रतिनिधि सभा से संबंधित नहीं है। (स्वतन्त्र रूप से सेवाएं दे रहे हैं। ऐसे विद्वानों को टंकारा बोधोत्सव पर सम्मानित किया जाएगा।) कृपया करके विस्तृत जानकारी चित्र सहित निम्न पते पर तुरन्त भेजें।

निवेदकः अरूण अब्रोल, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 10-11 मार्च 2021** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 10 फरवरी 2021 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री **Email:- tankarasamachar@gmail.com** या **mayankprinters5@gmail.com** पर "वॉकमेन चाणक्य" टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **अजय,** सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658, सम्पादकीय कार्यालयः ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

टंकारा ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष मनोनीत

श्री सुनील मानकटला ट्रस्टी श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा को जन्मभूमि स्थित टंकारा ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया। उपरोक्त नियुक्ति सर्वसम्मति से हुई। आप स्व. श्री ओंकारनाथ आर्य एवम् आर्य कोकिला श्रीमती शिवराजवती आर्या के सुपुत्र है। जन्मभूमि को आधुनिक रूप देने एवम् सौन्दर्यकरण के लिए आपके सुझाव एवम् सहयोग के लिए ट्रस्ट आपका आभारी है। आप द्वारा अपने पिता की स्मृति में श्री ओंकारनाथ आर्य महिला सिलाई केन्द्र, टंकारा में आपके सहयोग से ही चल रहा है। आपका सहयोग एवम् मार्गदर्शन टंकारा ट्रस्ट को इसी प्रकार से प्राप्त होता रहेगा, ऐसी हमारी आशा है। - **ट्रस्ट मन्त्री**

(पृष्ठ 01 का शेष)

''जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता, इसलिए **'मातृमान्'** अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्'** धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।''

वैदिक परम्परा में शिक्षा को एक वेदांग माना गया है और उसका लक्षण **''स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो शिक्ष्यते यया सा शिक्षा''** किया गया है। तदनुसार भलीभांति अक्षरों का उच्चारण सीखना ही शिक्षा है। उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने यह दायित्व भी माता को ही सौंपा है कि जब बालक बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे।'' इससे सुव्यक्त है कि महर्षि इस सत्य को भलीभांति समझते थे कि बाल्यावस्था में उच्चारण जैसा बन जाता है उसे बाद में बदलना या सुधारना कठिन हो जात है। यही कारण है कि आज जिन बालकों की उच्चारण-प्रक्रिया शैशव में परिष्कृत नहीं की जाती, वे बड़ी-बड़ी डिग्रियों से भूषित होकर भी भ्रष्ट उच्चारण के कारण सार्वजनकि रूप से लज्जित होते हैं। अत: बाल-शिक्षा में उच्चारण-प्रक्रिया सिखाया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

तदनन्तर बालकों को अक्षरज्ञान कराया जाना चाहिए-'जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का-लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।' इस कथन द्वारा महर्षि ने अनेक मूल्यवान् निर्देश दिए हैं-

(अ) प्रथम तो यह कि पहले शुद्ध उच्चारण सिखाना और उसके बाद अक्षरज्ञान कराया जाना चाहिए जबकि आजकल हम इसके प्रतिकूल पद्धति अपनाते हैं यानि पहले अक्षरज्ञान और फिर उच्चारण की शिक्षा। (आ) देवनागरी अक्षरों का अभ्यास सिखाने का निर्देश करते हुए महर्षि ने सूत्ररूप में मानो आर्यभाषा के महत्त्व एवं राष्ट्रीय एकता के मूल को संकेतित कर दिया है। (इ) अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी ज्ञान कराना चाहिए-यह कहकर महर्षि ने अपनी उदार एवं प्रगतिशील विचारधारा को सूचित किया है। वे जानते थे कि बाल्यावस्था ही भाषा सीखने के लिए सर्वश्रेष्ठ होती है, अत: मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा के साथ-साथ बालक को विदेशी भाषायें भी सिखाई जानी चाहिए। (ई) इन्हीं निर्देशों में यह लक्ष्य भी संनिहित है कि बालक की माता को शिक्षित एवं विदुषी होना चाहिए, तभी तो वह अपनी सन्तान् को शुद्ध उच्चारण एवं अपनी तथा विदेशी भाषाओं के अक्षरों का ज्ञान करा सकती है। अत: स्त्री-शिक्षा के पूर्ण पक्षधर महर्षि दयानन्द ने बाल-शिक्षा के सन्दर्भ में यह सिद्ध कर दिखाया है कि जब तक माता सुशिक्षित नहीं होगी तब तक शिशु को उत्तम शिक्षा नहीं दी जा सकती।

उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल अक्षरज्ञान ही नहीं, अपितु बाल्यावस्था में ही उचित-अनुचित व्यवहार एवं सद्गुणों के विकास की प्रवृति जागृत करना है-'जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े-छोटे, मान्य, पिता, माँ राजा, विद्वान्, आदि से भाषण-उनसे वर्तमान् और उसके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो के सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।'

इन सब प्रकार के व्यवहार की शिक्षा देने का उद्देश्य यह है कि बालक शिक्षित होकर किसी धूर्त के बहकावे में न आवें और जो-जो विद्याधर्म-विरूद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं, उनसे बचे रहें। इस सन्दर्भ में महर्षि ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य का प्रतिपादन किया है कि प्राय: बालक भूत आदि से डरते हैं और उनके माता-पिता भी इस डर को दूर करने की बजाय उसे बढ़ाने में ही योगदान करते हैं। इसलिए बाल्यावस्था में ही बालकों को यह सिखा देना माता-पिता का कर्तव्य है कि (1) मृतक शरीर का नाम 'प्रेत' है। (2) और जब उस शरीर का दाह हो चुका, तब उसका नाम 'भूत' है। जितने उत्पन्न हों, वर्तमान् में आके न रहें, वे भूतस्य होने से उनका नाम भूत है। (3) अत: भूत-प्रेत के नाम पर ठगने वाले पाखण्डी, ढोंगी धूर्तों के बहकावे में नहीं आना चाहिए। (4) इसी भाँति 'जन्मपत्र' आदि के द्वारा ठगने वाले धन के लोभी ज्योतिषियों से बचना चाहिए क्योंकि जन्म-मरण, सुख-दु:ख, पाप-पुण्य आदि सब अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन हैं, उसमें कोई मनुष्य परिवर्तन नहीं कर सकता-जो कोई उसे बदलने का दावा करता है वह केवल धन हरने के लिए किया गया ढोंग है। (5) इसलिए इन सब मिथ्या बातों का उपदेश बाल्यावस्था में ही सन्तानों के हृदय में डाल देना चाहिए जिससे कि वे किसी के भ्रमजाल में पड़ के दु:ख न पावें। (6) इन मिथ्या व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्त्ता, निष्कपटता से सबको पढ़ाने वाले उत्तम विद्वान् लोगों का प्रत्युपकार करना, जैसा वे जगत् का उपकार करते हैं, इसको कभी न छोड़ना चाहिए। इस विषय में महर्षि की यह भी धारणा है कि माता-पिता और आचार्य बालकों के प्रति हित-भावना और कृपा रखते हुए भी उन्हें अनुशासित और सुशिक्षित करने के लिए लाड़न नहीं, अपितु ताड़न का व्यवहार करें। सत्य, निराभिमानता, गुरुजनों के प्रति विनय-विनम्रता, छल-कपट-कृतघ्नता आदि से दूर होना, प्रतिभाषित, सत्संग और माता-पिता तथा आचार्य की सेवा-इन सद्गुणों के विकास की शिक्षा देते हुए माता-पिता और आचार्य अपने आचरण को भी आदर्श बनाएं। इस पर भी यदि उनके आचरण में कुछ न्यूनतायें रह जाएं तो चाहिए कि अपने संतान और शिष्यों को वे हमारे पूर्वज आचार्यों की भांति स्पष्ट, सत्य उपदेश करें और कहें कि- **''यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।''** जो-जो हमारे श्रेष्ठ आचरण हैं तुम उन्हीं का ग्रहण करो और जो हमारे दुष्ट कर्म हैं, उनका त्याग करो। इस भांति, महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में बाल-शिक्षा के विषय में जो महत्त्वपूर्ण संकेत दिए हैं वे सर्वथा मनोवैज्ञानिक, शाश्वत् एवं वर्तमान् काल में भी उपादेय हैं।

सेवानिवृत

श्री रामस्वरूप आर्य, आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग, नई दिल्ली से 45 वर्ष की सेवा करने के उपरांत 30 दिसम्बर 2020 को सेवानिवृत हो गए। आपकी सेवा कार्य के प्रति निष्ठा ईमानदारी एक उदाहरण के रूप में जानी जाती रहेगी। आपने आर्य समाज के प्रधान श्री शान्ति लाल जी सूरी, श्री टी.आर. गुप्ता, श्री मोहन लाल जी, श्री दरबारी लाल जी, श्री सुरजभान जी, प्रोफेसर श्री वेद व्यास जी, श्री रामनाथ जी सहगल जैसे महानुभाव की सेवा बड़ी निष्ठा से की। आर्य समाज में रहते आपने वैदिक आर्य मर्यादाओं का पालन किया एवम् शिखा (चोटी) रखकर स्वाध्याय भी किया। अशिक्षित होते हुए भी आपने प्रतिदिन यज्ञ करना नहीं छोड़ा। ऐसे व्यक्ति को उसके आने वाले जीवन में स्वस्थ एवम् दीर्घ आयु की कामना करते है।

-सम्पादक अजय टंकारावाला

॥ ओ३म् ॥

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 10, 11 मार्च 2021 (बुधवार, वीरवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञः 05 मार्च से 11 मार्च 2021 तक

ब्रह्माः आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीतः श्री दिनेश पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्षः

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् ट्रस्टी, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा)

बोधोत्सव

दिनांक 11.03.2021

ऋषि स्मृति समारोह

मुख्य अतिथिः **महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी**, राज्यपाल सिक्किम सरकार (आने की सम्भावना)
विशिष्ट अतिथिः श्री एस के शर्मा, निदेशक, डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवं मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
अध्यक्षताः श्री सुरेश चन्द आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम के आमन्त्रित महानुभावः स्वामी शान्तानन्द (गुजरात), **स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती** (यमुनानगर), **स्वामी आर्येशानन्द** (माऊन्ट आबू), **श्री अरविन्द घई** (सचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति), **श्री सत्यपाल आर्य** (सचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति), **डॉ. विनय विद्यालंकार** (उत्तराखण्ड), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (राजकोट), **श्री ललित भाई कगधरा** (स्थानीय विधायक), **श्री बृजेश मेरजा** (विधायक मौरबी), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री रतनशी भाई वेलाणी** (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा), **श्री अमित पटेल** (मन्त्री आर्य वीर दल भुज), **श्री अशोक तगड़ा** (भुज) ,**श्री देव आर्य** (कोषाध्यक्ष, आर्य वीर दल गुजरात) एवम् इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान् एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यो के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक **योगेश मुंजाल**, कार्यकारी प्रधान **शिवराजवती आर्या**, उपप्रधाना **अजय सहगल**, मन्त्री

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाषः (02822) 287756, उपकार्यालयः आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

बोले गए शब्द ही ऐसी चीज है
जिसकी वजह से इंसान,
या तो दिल में उतर जाता है
या दिल से उतर जाता है।

टंकारा समाचार फरवरी 2021
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2021-22
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-02-2021
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.01.2021

मुद्रक व प्रकाशक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**